संस्कृति गरिमा विशेषांक

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०२५
वर्ष : ३५ अंक : ५ (निरंतर अंक : ३९५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

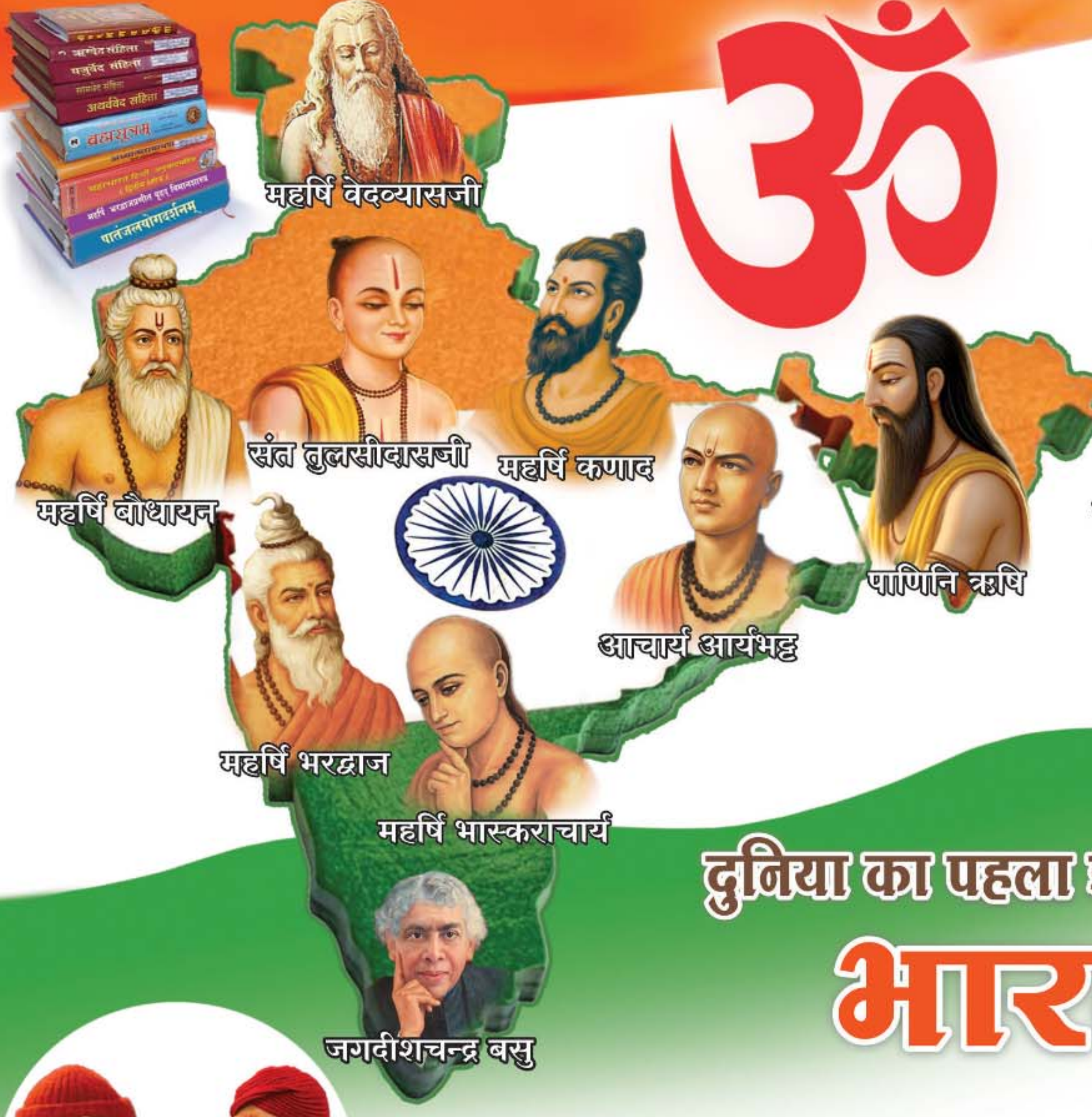

जिस समय पाश्चात्य सभ्यता का अस्तित्व भी नहीं था उस समय से भारतवर्ष के मनीषियों ने विश्व को अद्वैत वेदांत-ज्ञान के साथ भौतिक जगत की अद्भुत खोजें प्रदान की हैं।

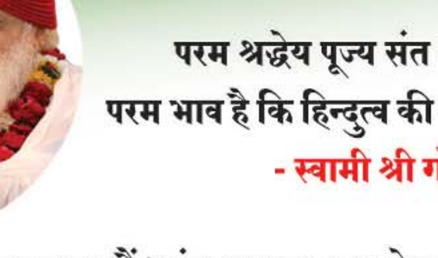

दुनिया का पहला ज्ञान-स्रोत
भारत

पढ़ें पृष्ठ ६

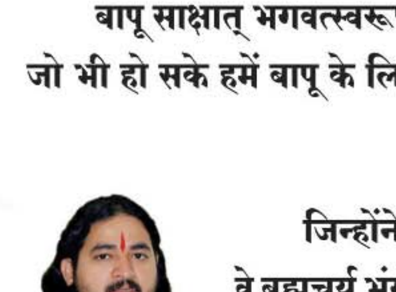

परम श्रद्धेय पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के लिए मेरे अंतःकरण में इसलिए परम भाव है कि हिन्दुत्व की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। - स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष

बापू साक्षात् भगवत्स्वरूप हैं। संत-समाज हृदय से बापू से प्रेम करता है। हमसे जो भी हो सके हमें बापू के लिए करना चाहिए। - श्रीमहंत रविन्द्र पुरीजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

जिन्होंने करोड़ों लोगों को ब्रह्मचर्य-पालन के मार्ग पर चला दिया वे ब्रह्मचर्य भंग कैसे कर सकते हैं ? यह तो बापूजी के साथ छल किया गया है। - श्री धनंजय देसाई, संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना

आप अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए उद्यमी बनिये - पूज्य बापूजी

हिन्दू सहिष्णु हैं, उदार हैं यह बात तो ठीक है परंतु हिन्दू मूर्ख नहीं हैं, कायर नहीं हैं। जैसे समुद्र की लहर पीछे लौट जाती है और फिर उलटकर आती है तो और जोरों के वेग से आती है, उसी प्रकार जब-जब इस संस्कृति पर आक्रमण हुए हैं तब-तब प्रतिरक्षात्मक भारतीय लहर तीव्र वेग से उलटकर आयी है। भारतीय संस्कृति कहती है :

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्। शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

'दुर्जन सज्जन बनें। सज्जनों को शांति मिले और शांतात्मा अपने मुक्तस्वरूप का अनुभव करें तथा मुक्त पुरुष औरों को मुक्ति के मार्ग पर ले जायें।'

मनुष्य-जीवन संघर्ष में नष्ट करने के लिए नहीं है और संघर्ष सहकर नष्ट होने के लिए भी नहीं है। जुल्म करना तो पाप है लेकिन जुल्म सहना दुगना पाप है। तो आप सभीको उत्तम सलाह है कि आप अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए उद्यमी बनिये।

मनुष्य पाशवी, मानवीय और दैवी - इन तीन घटकों का मेल है। उसे पाशवी वासनाएँ, पाशवी अहंकार कुछ भी करने को बाध्य कर देता है। मानवीय संवेदनाएँ लगाम लगाकर व्यक्ति को ठीक रास्ते पर चलाती हैं। जब व्यक्ति ठीक रास्ते चलता है तो उसका ईश्वरीय अंश जगाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति की ललक - जिज्ञासा जगती है और व्यक्ति ईश्वरीय अंश जगाकर अपने को सुख-दुःख का साक्षी जान लेता है, मान-अपमान, जय-पराजय का साक्षी जान लेता है, जीवन और मृत्यु को साक्षीरूप से देख के जीते-जी अपने अमर आत्मा का अनुभव कर लेता है। जिस संस्कृति में मानव की उन्नति की ऐसी उत्तम व्यवस्था है उस भारतीय संस्कृति पर इतना जुल्म और अन्याय ? पाशवी अंश के लोग इतने हावी हो जायें कि दो-पाँच-पचीस लोगों के षड्यंत्र के कारण करोड़ों लोग व्यथित हों ?

अब हमको अन्याय और जुल्म को उखाड़ फेंकने के लिए अपने अंदर दैवी शक्ति विकसित करनी होगी। जो मानवीय संवेदनाओं से भरे हैं वे सत्संग में आ पहुँचते हैं लेकिन अब दैवी शक्ति का सामर्थ्य भी अपने में लाना होगा। हमारे अंदर ईश्वरीय सत्ता की जागृति होनी चाहिए। ॐकार का गुंजन ईश्वरीय सत्ता से आपका सीधा संबंध जोड़ देता है। आप 'ॐ' का जप करके अपना संकल्प वातावरण में छोड़ें कि **'हमारी संस्कृति की रक्षा करने हेतु हम सबका हौसला बुलंद हो और हमारे साथ और लोग भी चलें। हमारी संस्कृति की रक्षा करनेवाले प्रहरियों का हौसला बुलंद हो और देश की संस्कृति के लिए जो आगे आते हैं वे सदा आगे रहें।'** भारतीय संस्कृति के जो प्रहरी हैं, देशवासियों की पीड़ा को जो जानते हैं, ऐसे लोगों को सहयोग देने का आप सभी संकल्प करें।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३५ अंक : ५ (निरंतर अंक : ३९५)
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी | कार्तिक-मार्गशीर्ष, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'संस्कृति गरिमा विशेषांक' में...

❖ **सांस्कृतिक गौरव** ❇ यह ऋषियों की प्रसादी है, भारत की संस्कृति है ! ४
❖ **शास्त्र प्रसाद** ❇ भौगोलिक-खगोलिक परिस्थितियों से ऊपर होती है ब्रह्मवेत्ता की सूझबूझ ५
❖ **भारत दुनिया का पहला ज्ञान-स्रोत था** - पूर्व इसरो अध्यक्ष डॉ. एस. सोमनाथ ६
❖ **आनेवालीं पुण्यदायी तिथियाँ व योग** ८
❖ **मंत्रदीक्षा महिमा** ❇ आयु, आरोग्य और मुक्ति देनेवाली मंत्रदीक्षा ९
❖ **...इसलिए सतर्क होने की आवश्यकता है** - पं. रामकृष्णजी उपाध्याय १०
❖ **गीता जयंती पर विशेष** ❇ भगवान का हृदय व मानवता की अमर धरोहर ११
❖ **पश्चिमी देशों का अनुभव करने के बाद भारत कैसा लगता है ?** १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ❇ गुरुवर सिखाते व्यवहार में आत्मीयता और सजगता का पाठ - भास्कर सिंह १४
❖ **चर्चित खबर** ❇ हिन्दू मंदिरों पर राज्य का कब्जा : धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लूट - श्री आशुतोष झा, अधिवक्ता, कोलकाता उच्च अदालत १६
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ❇ ऐसी जिज्ञासा हो तो हर बच्चा बन सकता है महान १८
❇ फिर हम जो चाहें वह कर सकते हैं - स्वामी अखंडानंदजी १९
❇ कितना भी कामी हो इस प्रयोग से उसका काम राम में बदलेगा १९
❖ **तेजस्वी युवा** ❇ क्यों है ब्रह्मचर्य परम आवश्यक ? - स्वामी शिवानंदजी २०
❖ **महिला उत्थान** ❇ सभीके लिए आवश्यक है गीता का ज्ञान २१
❖ **मंत्र शक्ति** ❇ मंत्रजप से शुद्ध होते हैं जन्मकुंडली के बारह स्थान २२
❖ **तत्त्व दर्शन** ❇ अपने वास्तविक स्वरूप को कैसे समझें ? २४
❖ **संत चरित्र** ❇ परमहंस संत भूमानंदजी के जीवन-प्रसंग २५
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **जीवन जीने की कला** ❇ पूज्य बापूजी ने सिखायी सूर्योपासना २७
❖ **दिव्य आनंद व मोक्ष दाता योग : कुंडलिनी योग** २८
❖ **भक्तों के अनुभव** ❇ गुरुवचनों के पालन और दैवी चिकित्सा से जानलेवा रोग से मुक्ति - भास्कर सिंह २९
❖ **जीवनोपयोगी कुंजी** ❇ मंगलदोष होने से शादी नहीं हो रही हो तो... २९
❖ **स्वास्थ्य समाचार** ❇ शीतकाल में लाभकारी स्वास्थ्य-हितकारी बातें ३०
❖ **ॐकार व स्वस्तिक दर्शन के लाभ** ३०
❖ **समसामयिक** ❇ गीतारूपी धरोहर के सम्मान की रक्षा के लिए... ३१
❖ **तुलसीकृत रामायण ने किया एक पादरी का हृदय-परिवर्तन** ३२
❖ **संस्कृति विज्ञान** ❇ भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य ३३
❖ **ॐकार मंत्र की १९ शक्तियाँ** ३४
❖ **गुरुमंत्र के जप से उत्पन्न १५ शक्तियाँ** ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu
सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : **Rishi Prasad App** (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), **Rishi Darshan App** (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं **Mangalmay Digital App**

आयु, आरोग्य और मुक्ति देनेवाली मंत्रदीक्षा - पूज्य बापूजी

दीक्षा लेने का मतलब है उचित दिशा लेना। दूसरा मतलब है कि जो दुःख-दरिद्रता, पाप-ताप, शोक-मोह का क्षय करना चाहता हो वह शिष्य और जो सुख-शांति, भक्ति-मुक्ति, ओज, आयु, आरोग्य देने की क्षमता रखें वे गुरु - इन दोनों के मेल का नाम है 'दीक्षा' ।

यह ३ प्रकार की होती है : शाम्भवी दीक्षा, जो दृष्टि से दी जाती है । स्पर्श दीक्षा, जैसे - शुकदेवजी ने परीक्षित के सिर पर हाथ रखकर दी थी। तीसरी है मांत्रिक दीक्षा । गुरु-गोविंद का, भगवान का कोई नाम मंत्ररूप में दे देना ।

मंत्रदीक्षा व्यक्तिगत जीवन में निखार और सामाजिक जीवन में शान-मान बढ़ानेवाली, आयु, आरोग्य और पुष्टि देनेवाली है । आध्यात्मिकता में जो उन्नत हैं उनके द्वारा मंत्र मिलता है और सामनेवाला श्रद्धा से जप-साधना करता है तो मंत्र जपनेवाले को तार देता है । मंत्र का अर्थ ही है : **मननात् त्रायते इति मन्त्रः ।** 'मनन करने पर जो त्राण यानी रक्षा करे वह मंत्र है ।' मंत्र का दूसरा अर्थ है - जिससे मन तर जाय उस दिशादर्शक साधन का नाम है 'मंत्र' । तीसरा अर्थ है - जो अंतर में मनन करने पर तार दे, भवपार कर दे उसे 'मंत्र' बोलते हैं ।

ज्यों-ज्यों मंत्रजप करते हैं त्यों-त्यों हमारी ७२,००० नाड़ियों, २६ उपत्यकाओं, ५ शरीरों और ७ मुख्य चक्रों में आध्यात्मिक, सात्त्विक भगवद्-आंदोलन पैदा होते हैं ।

जिसके पास गुरुमंत्र है वह उसका आश्रय ले तो मंत्रजप से बड़े-बड़े विघ्न, बाधा और भय के प्रसंगों के समय भी निर्भय व्यक्ति की नाईं सफल हो सकता है ।

जब ही नाम हृदय धर्‌यो भयो पाप को नास ।
जैसे चिनगी आग की पड़ी पुराने घास ॥

दीक्षा से क्या होता है ? गुरुमंत्र के प्रभाव से बुद्धि में बल आ जाता है । ५ इन्द्रियों के पीछे मन घसीटा जाता था तो कमजोर हो जाता था, बुद्धि बलवान हुई तो मन को ऊँची जगह पर ले जायेगी ।

जो भी दीक्षा लेते हैं उनको मैं आग्रहपूर्वक कहता हूँ कि तुमको दीक्षा के पहले जो त्रिबंधयुक्त प्राणायाम सिखाये जाते हैं वे ४ प्राणायाम रोज करने ही चाहिए । इन्द्रियों का स्वामी मन है और मन का स्वामी प्राण है । आपका प्राण मजबूत तो मन भी मजबूत और रोगप्रतिकारक शक्ति भी मजबूत । प्रातः ३ से ५ बजे के बीच फेफड़ों में प्राणशक्ति विशेष सक्रिय होती है, प्राणायाम करने के लिए यह बहुत प्रभावशाली समय है । इस समय नहीं कर सके तो और समय पर कर लो ।

व्यक्ति क्षुद्र चीजों - माँ-बाप के रज-वीर्य से पैदा होता है और सामान्य जीवत्व में ही जीता है, बाह्य इन्द्रियों में, बाह्य उपचारों में, साधनों में जीता है परंतु जब सौभाग्य होता है तब सद्गुरु की दीक्षा मिलती है । आत्मवेत्ता सद्गुरु से दीक्षा मिलती है तो वह व्यक्ति द्विज हो जाता है । क्षुद्र शरीर में रहते हुए भी द्विज बन जाता है, दोबारा जन्मा है । आधिदैविक व आध्यात्मिक जगत में गति हो के फायदा होने लगता है ।

जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान ।

(रामचरित. उ.कां. : १०३)

कलियुग में जिस किसी भी प्रकार से दिये

भगवान का हृदय व मानवता की अमर धरोहर : भगवद्गीता

गीता जयंती पर विशेष

१ दिसम्बर को श्रीमद्भगवद्गीता जयंती है। इस दिन देश-विदेश के संत श्री आशारामजी आश्रमों, बाल संस्कार केन्द्रों, महिला उत्थान मंडलों, युवा सेवा संघों तथा आश्रम की समितियों द्वारा गीताजी का पूजन, कीर्तन यात्राएँ निकालना आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । पूज्य बापूजी के गीता पर विशेष ऑडियो-विडियो सत्संग चलाये जाते हैं और गीता पर आधारित साहित्य का वितरण, प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

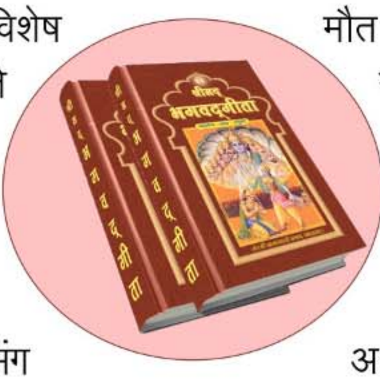

गीता की आवश्यकता व महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

हमें सभी धर्मग्रंथों के प्रति सद्भाव तो है लेकिन भगवद्गीता ने तो मानव-जाति की अद्भुत शक्तियों का थोड़े-से ही वचनों में... बस, वहाँ वाणी चुप हो जाती है। भगवद्गीता एक ऐसा ग्रंथ है जो वेदों का, उपनिषदों का सार और भगवान श्रीकृष्ण के हृदय की अनुभव-पोथी है । भगवान बोलते हैं :

गीता मे हृदयं पार्थ ।

'हे अर्जुन ! गीता मेरा हृदय है ।'

ऐसी गीता का ज्ञान, गीता का एकाध श्लोक भी समझ में आ जाय... समझ में मतलब जैसे आप जानते हैं कि साँप काटता है। साँप आ जाय तो आप मेरे से पूछोगे नहीं कि ''बाबाजी ! हटें कि नहीं हटें ?'' मैं कहूँ कि ''बैठे रहो।'' तब भी आप नहीं मानोगे, खिसक जाओगे । तो आप समझ गये हैं कि साँप काटता है, साँप का विष नुकसान करता है । ...तो इस प्रकार गीता का उपदेश, उसका एक श्लोक भी अगर ठीक से समझ में आ जाय तो आप दुःखी होना चाहो तो भी नहीं हो सकते, सुख को भगाना चाहो तो नहीं भगा सकते । ऐसा गीता का ज्ञान है ।

जो गीताकार के वचनों का आदर नहीं करता वह सुख पकड़ते-पकड़ते मर जाता है, सुख टिकता नहीं, ऐसे ही दुःख भगाते-भगाते खुद ही मौत के मुँह में भाग जाता है, दुःख भागता नहीं, मरते समय भी दुःखी होकर ही मरता है । अरबों मनुष्य हैं धरती पर, कोई भी समझदार व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मैंने फलाना काम दुःखी होने के लिए किया था अथवा कर रहा हूँ। कोई दुःखी होने के लिए काम नहीं करता, कोई दुःख चाहता नहीं फिर भी दुःख मिटता नहीं और सुख टिकता नहीं । यह क्या बात है ? गीता की बात मान लो तो सुख मिटेगा नहीं, दुःख टिकेगा नहीं ।

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत् ॥

गीता के एकाध श्लोक का पाठ, भगवान गोविंद की स्मृति, कीर्तन और ब्रह्मवेत्ता साधुपुरुषों का दर्शन करोड़ों तीर्थ करने का फल देता है ।

दुःख मिटाने व सुख टिकाने हेतु

सदा के लिए दुःख को मिटाना और सुख को टिकाना है तो गहरा श्वास लो और मन में चिंतन करो कि 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं । मैं भगवान की बात मानने के लिए तैयार हूँ।' फिर सिर को ऊपर-नीचे करते हुए कंठ से ॐकार का गुंजन करना है, मतलब भगवान को बोल रहे हो कि 'हाँ, मैं आपकी बात मानने को तैयार हूँ ।' कंठ से ॐ ॐ करना माने सहमति है । इससे

पश्चिमी देशों का अनुभव करने के बाद भारत कैसा लगता है ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

स्वामी विवेकानंदजी अमेरिका, यूरोप आदि की यात्रा करके भारत लौट रहे थे तो उनके एक अंग्रेज मित्र ने कटाक्ष और व्यंग्य से भरे हुए लहजे में कहा : ''चार वर्षों तक ऐश्वर्यपूर्ण, गौरवशाली, शक्तिशाली पश्चिम (पश्चिमी देशों) का अनुभव करने के बाद अब आपको अपनी मातृभूमि कैसी लगती है ?''

उसने सोचा कि विवेकानंद पश्चिमी तामझाम से प्रभावित हुए होंगे और यहाँ के सुख-वैभव और विलासिता का महत्त्व ये जान गये होंगे । वास्तविकता विवेकानंद जानते थे तो उन्होंने वह कह दी :

''भारत से मैं पहले भी प्रेम करता था लेकिन अब तो भारत की धूल तक मेरे लिए पवित्र हो गयी है, उसकी वायु भी अब मेरे लिए पवित्र है; वह अब मेरे लिए पुण्यभूमि है, तीर्थस्थान है ।''

विदेशों में शरीर को ही मैं मानते हैं व मिली हुई चीजों को ही मेरा मानते हैं और इस देह को सुख-सुविधा मिले, ५-२५ रिश्तेदार वाहवाही करें इतने में ही उनका दर्शन (चिंतन, ज्ञान, सिद्धांत) समाप्त हो जाता है ।

विवेकानंदजी के हृदय का भाव था कि 'पहले मैं भारत का सम्मान करता था, अभी मैं मेरी मातृभूमि भारत का पूजन करूँगा । क्षमा, औदार्य, निष्काम कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और जीवन को जीवनदाता से मिलाने का मार्ग भारत देश में है । अब मैं भारतभूमि का, मातृभूमि का पूजन करूँगा ।'

कैसा निर्मल विवेक ! यह निर्मल विवेक मिला था रामकृष्णजी की शक्तिपात, ध्यान की कृपा के द्वारा । विद्यार्थियों के पास विवेक होता है, खाते-कमाते हैं, सेठ-साहूकार, उद्योगपति आदि बनते हैं किंतु इतना निर्मल विवेक तो किसी-किसीके पास ही होता है । कोई भी जाते हैं विदेश में और फिर उनसे कोई पत्रकार पूछता है तो वहाँ की भाषा बोल देते हैं कि 'बहुत अच्छा लगा । ऐसा लगा, यह लगा - वह लगा ।'

मैं जब स्विट्जरलैंड से अमेरिका गया तो मुझे एक सज्जन मिले । उन्होंने मेरे को पूछा कि ''बापूजी ! स्विट्जरलैंड कैसा लगा ?''

मैंने कहा : ''प्राकृतिक वातावरण तो ठीक है, बाकी कुछ खास नहीं है ।''

वे सज्जन बोले : ''स्वामीजी ! दुनिया के जो बड़े-बड़े चोर हैं, तस्कर हैं उन चोर लोगों का देश है स्विट्जरलैंड । वे लोग खूब भ्रष्टाचार करते हैं, खूब दो नम्बर के पैसे बनाते हैं और स्विट्जरलैंड में रखते हैं ।''

मैंने देखा कि वहाँ लोग निस्तेज हैं बहुत । वातावरण के कारण त्वचा तो सफेद है और पैसा भी है, सुविधाएँ भी हैं लेकिन आँखों में देखो तो कोई तेज नहीं, कोई आभा नहीं लड़कों में, लड़कियों में । बाहर से टिपटॉप किंतु अंदर से इतने नीरस कि सब कुछ होने के बाद भी सुख के

(शेष पृष्ठ २५ पर)

हिन्दू मंदिरों पर राज्य का कब्जा : धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लूट

– श्री आशुतोष झा, अधिवक्ता, कोलकाता उच्च अदालत, संयुक्त सचिव, हिन्दू एकता मंच (प.बं.)

चर्चित खबर

हिन्दू संत-महापुरुषों के आश्रम और मठ-मंदिर प्राचीन काल से भगवद्-उपासना, वैदिक शिक्षण और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। हाल ही में तमिलनाडु सरकार द्वारा किये गये मंदिर-निधि के गैर-धार्मिक उपयोग से जुड़े मामले पर मद्रास उच्च न्यायालय ने कहा : 'मंदिर-निधि भक्तों और दानदाताओं द्वारा दिये गये दान तथा देवता/मंदिर के नाम पर प्रदत्त अचल सम्पत्तियों से केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए एकत्र की जाती है अथवा मंदिरों में उत्सव मनाने या मंदिर के रखरखाव और विकास के लिए एकत्र की जाती है। अतः मंदिर-निधि को सार्वजनिक अथवा सरकारी निधि नहीं माना जा सकता।'

हिन्दू मंदिरों पर राज्य-नियंत्रण का कड़वा इतिहास

हिन्दू मंदिरों पर राज्य-नियंत्रण सर्वप्रथम अंग्रेजों ने किया था। वे भारत में आये तो उन्होंने मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दू मंदिरों में की गयी लूट-खसोट, अव्यवस्था के चलते हिन्दू मंदिरों के सुव्यवस्थित प्रबंधन के नाम पर कानून बनाने शुरू किये। हमारे मंदिरों को नियंत्रित करके उनका रख-रखाव करना तो मात्र ढकोसला था, उनका असली उद्देश्य तो मंदिर-निधि को औपनिवेशिक (colonial) खजाने में स्थानांतरित करना और भारतीय समाज पर प्रभुत्व स्थापित करना था। उन्होंने हिन्दू मंदिरों के प्रशासन को अपने अधिकार में लेने हेतु अनेक भेदभावपूर्ण नियम पारित किये जबकि अन्य धर्म-समुदायों को ऐसे नियंत्रण से पूरी तरह मुक्त रखा गया।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राज्य सरकारों द्वारा इन नियमों को हटाने के बजाय धर्मनिरपेक्षता को ढाल बना के नये रूपों में लागू कर दिया गया। केवल १० राज्यों की सरकारें १,१०,००० से अधिक हिन्दू मंदिरों को नियंत्रित करती हैं। हिन्दू मंदिरों की निधि मुसलमानों और ईसाइयों से जुड़ीं परियोजनाओं के लिए खर्च की जाती है, सीधे-अनसीधे जिनका उपयोग हिन्दू धर्म के खिलाफ किया जाता है। हिन्दू मंदिरों में जो हिन्दू भक्त दान देते हैं वे केवल हिन्दू धर्म के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देते हैं, अन्य धर्मों के लिए नहीं। इस बात पर भी सरकारों को ध्यान देना चाहिए। अगर सरकारें इस धन का उपयोग हिन्दू-विरोधी धर्मों के उद्देश्य की पूर्ति के लिए करती हैं तो वे हिन्दुओं के साथ विश्वासघात करती हैं। ८०% से अधिक हिन्दू आबादीवाले इस राष्ट्र में ऐसा होना तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की पोल खोल देता है। यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ का भी स्पष्ट उल्लंघन है।

सुप्रसिद्ध राजनीतिक विचारक एवं लेखक डॉ. आनंद रंगनाथन ने २०२३ में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Hindus In Hindu Rashtra' में लिखा है कि 'हिन्दू मंदिरों और उनकी सम्पत्ति पर राज्य का नियंत्रण स्वतंत्र भारत का अब तक का सबसे बड़ा व आर्थिक रूप से सबसे अधिक नुकसानदायक घोटाला है। यह न केवल जारी है बल्कि वर्तमान सरकार के शासन में फल-फूल रहा है। यह इस बात का दुःखद प्रतिबिम्ब है कि

विद्यार्थी संस्कार

ऐसी जिज्ञासा हो तो हर बच्चा बन सकता है महान

- पूज्य बापूजी

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि एक अर्थी को देखकर बालक पांडुरंग ने किस प्रकार पिताजी से जिज्ञासाभरे गूढ़ सवाल पूछे । पांडुरंग पिता से पूछता है कि मौत से बचने का कोई उपाय है क्या ? **अब आगे...**)

पिता बोले : ''हाँ बेटा ! एक ही उपाय है - भगवान का नाम, राम का नाम जपते, जपते, जपते... गहरे में चला जाय और अंतर्यामी राम का अनुभव हो जाय तो व्यक्ति मुक्त हो जाय ।''

''अच्छा ! तो राम का नाम जपते, जपते, जपते... फिर क्या होता है ?''

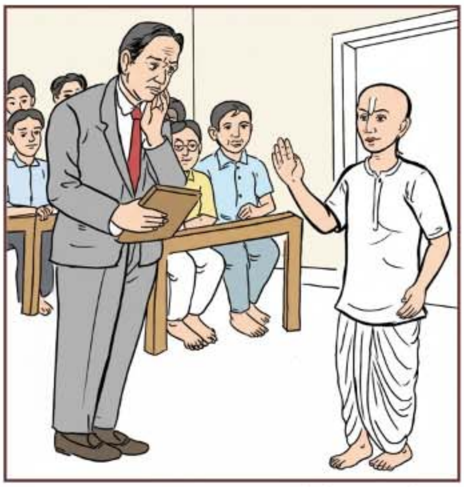

''व्यक्ति शांत हो जाता है, ध्यानस्थ हो जाता है फिर बाहर नहीं जपता, मन में जप चलता है । फिर वह राम अपना आत्मा है ऐसा ज्ञान होता है जब गुरु की कृपा मिलती है ।''

''तो गुरु की कृपा मिलती है, ज्ञान होता है, किसका ज्ञान होता है ?''

''मैं कौन हूँ - इसका उसे ज्ञान हो जाता है ।''

''अच्छा, पिताजी ! कोई मरता है तो वह कहाँ जाता है ? यह शरीर तो पड़ा रहता है फिर कौन मरता है ?''

बोले : ''वह जीव निकलता है, जीवात्मा जिस शरीर में जाता है उस शरीरवाला बन जाता है ।''

''तो जीवात्मा क्या होता है ?''

पिता : ''जीने की इच्छा करता है तो जीवात्मा और अपने को जान ले तो वही परमात्मा ।''

''तो मैं अपने को जान लूँगा, जीने की इच्छा नहीं करूँगा । अपने आत्मा को, परमात्मा को जान लूँगा पिताजी !''

बोले : ''अच्छा-अच्छा बेटे ! अब तो चुप कर, तू तो बहुत पूछता है ।''

बालक पांडुरंग की निर्भीकता

डेढ़ साल के पांडुरंग को मंत्र मिल गया और जपते-जपते स्कूल में पढ़ने जाता । चौथी कक्षा में पांडुरंग था । मास्टर ने कहा : ''तुम कल बढ़िया कपड़े पहन के आना और टाई बाँध के आना ।''

पांडुरंग खड़ा हो गया : ''हम क्यों टाई बाँधें ?''

''कल अंग्रेज साहब निरीक्षण के लिए आनेवाले हैं ।''

''आनेवाले हैं तो आयें, हम तो अपने स्वच्छ कपड़े पहन के आयेंगे । हम ऐसा क्यों नाटक करें कि उनको अच्छे लगें । कल को वे बोलेंगे कि तुम तो काले-काले हो और आप बोलोगे कि सफेदा पोत के आओ तो क्या हम अपने मुँह पर सफेदा पोत के आयेंगे ?''

मास्टर के कानों की हवा निकाल दी चौथी पढ़नेवाले पांडुरंग ने ।

पांडुरंग पढ़ते-पढ़ते स्नातक हुए । सुबह जल्दी उठते, परमात्मा का ध्यान करते और दिनभर अपना जो भी कामकाज करते उसमें भी बार-बार ईश्वर का चिंतन करते । आखिर एक

मंत्रजप से शुद्ध होते हैं जन्मकुंडली के बारह स्थान - पूज्य बापूजी

मंत्र शक्ति

शास्त्रों में जन्मकुंडली के बारह स्थान बताये गये हैं । **एक करोड़ जप** पूरा होने पर उनमें से प्रथम स्थान - तनु स्थान शुद्ध होने लगता है । रजो-तमोगुण शांत होकर रोग-बीजों व जन्म-मरण के बीजों का नाश होता है तथा शुभ स्वप्न आने लगते हैं । संतों, देवताओं व भगवद्-मूर्ति (विग्रह) के दर्शन होने लगते हैं । कभी कम्पन होने लगेगा, कभी हास्य आने लगेगा, कभी नृत्य उभरेगा, कभी आप सोच नहीं सकते ऐसे-ऐसे रहस्य प्रकट होंगे । निगुरों के आगे इन रहस्यों को प्रकट नहीं करना चाहिए । रात को सोते समय कंठ में गुरुदेव के साथ तादात्म्य करके सो गये तो गुरु-शिष्य का संबंध जुड़ जाता है । श्रद्धा तीव्र है तो संबंध जल्दी जुड़ता है अन्यथा दो-तीन महीने में जुड़ जाता है । स्वप्न में गुरु अथवा संत के दर्शन होने लगें तो समझो एक करोड़ जप का फल फलित हो गया ।

डरने की बात नहीं है कि एक करोड़ जप कब पूरा होगा । साधारण जगह पर जप की अपेक्षा तुलसी की क्यारी के नजदीक एक जप दस जप के बराबर होता है । देवालय अथवा आश्रम में प्राणायाम करके किया गया एक जप सौ गुना ज्यादा फल देता है । ब्रह्मवेत्ता गुरु के आगे किया गया एक जप हजारों गुना फल देता है । संयम, श्रद्धा, एकाग्रता व तत्परता जितने अंशों में मजबूत होंगे, जप उतना ज्यादा प्रभावी होगा । मंगलवार की चतुर्थी, सोमवार की अमावस्या, बुधवार की अष्टमी और रविवार की सप्तमी - ये ४ तिथियाँ सूर्यग्रहण के तुल्य हैं । सूर्यग्रहण में जप का फल १० लाख गुना व चन्द्रग्रहण में लाख गुना होता है । किंतु निषिद्ध कर्मों का त्याग करने की सावधानी न रखी जाय तो जप से उतना फल नहीं मिल पाता जितना मिलना चाहिए । इसलिए शास्त्रों में हीन कर्मों का त्याग करने के लिए कहा गया है :

हीनकर्म त्यजेत्सर्वं गर्हितस्थानमेव च ।

(गुरुगीता : १४५)

(उपरोक्त के सिवा अन्य भी पुण्यदायी तिथियाँ और योग हैं जिनमें जप का फल हजारों-लाखों गुना होता है । इनकी जानकारी ऋषि प्रसाद, लोक कल्याण सेतु तथा आश्रम के डायरी-कैलेंडर से प्राप्त हो सकती है ।) अगर **दो करोड़ जप** पूरा हुआ तो जन्मकुंडली का दूसरा स्थान - कुटुम्ब स्थान शुद्ध व प्रभावशाली हो जाता है । धन की प्राप्ति होगी, कुटुम्ब का वियोग नहीं होगा । समता, शांति व माधुर्य स्वाभाविक हो जायेगा । कुटुम्ब स्थान शुद्ध होने पर नौकरी व धनप्राप्ति के लिए भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी । जैसे व्यक्ति की छाया उसके पीछे चलती है ऐसे ही धन और यश उसका दास होकर उसके पीछे चलेंगे ।

तीन करोड़ जप की संख्या पूरी होने पर जन्मकुंडली का तीसरा स्थान - पराक्रम स्थान, भ्रातृ स्थान या सहज स्थान शुद्ध हो जाता है, जाग जाता है । असाध्य कार्य आपके लिए साध्य हो जाता है । लोग आपको स्नेह-प्रेम करेंगे । आपकी उपस्थिति मात्र से लोगों की प्रेमावृत्ति छलकने लगेगी ।

अगर **चार करोड़ जप** हो जाता है तो चौथा स्थान - सुख स्थान, मित्र स्थान शुद्ध हो जाता है । शरीर और मन के आघात नहीं के बराबर हो जायेंगे । मानसिक उपद्रव की घटनाएँ होंगी लेकिन आपका मन उन सबसे निर्लेप रहेगा ।

तुलसीकृत रामायण ने किया एक पादरी का हृदय-परिवर्तन

अंग्रेजों के शासनकाल में इंग्लैंड से एक पादरी ए. जी. एटकिंस को भारत में हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए भेजा गया । उसको उत्तर प्रदेश एवं बिहार का क्षेत्र दिया गया । उसने बाइबिल सोसायटी को लिखा : 'तुलसी रामायण उत्तर भारत की बाइबिल है ।' वहाँ से आदेश आया कि 'तुलसी रामायण छुड़ाकर ईसाई बाइबिल पढ़ाओ ।'

उसने सोचा कि 'रामायण के गुण-दोष क्या हैं यह जानकर उसकी आलोचना करूँगा फिर उसको उखाड़ के हिन्दुओं को बाइबिल पढ़ाऊँगा ।' उसने काशी जा के हिन्दी व अवधी पढ़ी और हिन्दुस्तानी बाइबिल अर्थात् तुलसीकृत रामायण पढ़ी । वह पढ़ता गया और आलोचना करने के लिए बिंदु लिखता गया । फिर उसने सोचा कि 'मैं जो आलोचना करूँगा उसे लोग हलका न सोचें कि हलके व्यक्ति ने, घटिया व्यक्ति ने आलोचना की है । पहले अच्छी धाक जमा लूँ फिर आलोचना करूँगा ।'

उसने तुलसीकृत रामायण के दोहों-चौपाइयों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद करना शुरू किया । जब बालकांड पूर्ण हुआ तब उसने सोचा कि 'यदि यह प्रकाशित हो जाय तो लोग मेरी प्रशंसा करेंगे । तब आलोचना करूँगा तो लोग कहेंगे कि किसी अनाड़ी ने आलोचना नहीं की वरन् एक अधिकारी विद्वान आलोचना कर रहा है ।'

उसने अपना अनुवाद भारत के स्वतंत्रता सेनानी पुरुषोत्तमदास टंडन को दिखाया । उनको खूब अच्छा लगा । वे उसे लेकर गांधीजी के पास पहुँचे । गांधीजी ने अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा तो उनकी दोनों आँखों से गंगा-यमुना बहने लगीं । उन्होंने कहा : ''आपने तो बहुत अद्भुत कार्य किया है । जो कार्य आज तक कोई नहीं कर सका उसे आपने कर दिखाया । आप भले ही क्रिश्चियन धर्मावलम्बी पादरी हो किंतु साहित्य के क्षेत्र में आपका बहुत बड़ा योगदान रहेगा । यह अनुवाद-कार्य चालू रखें, इसे बंद न करें ।''

वह पादरी अनुवाद करते-करते तुलसीकृत रामायण के अर्ध भाग तक पहुँचा तब इंग्लैंड में बाइबिल सोसायटी को उसने लिखा कि 'बाइबिल का प्रचार करने के लिए मैंने आलोचना करने की दृष्टि से रामायण को पढ़ना शुरू किया था किंतु तुलसी रामायण के रंग में आज इतना रंजित हो गया हूँ कि तुम्हारी बाइबिल तुम अपने पास ही रखो, मैं तो तुलसीदास का हो गया हूँ । यह ग्रंथ गुणों की खान है । पद-पद में, पंक्ति-पंक्ति में गुण-ही-गुण भरे हुए हैं । इतने श्रेष्ठ ग्रंथ को छोड़ना मेरे लिए सम्भव नहीं होगा । मैंने अपने जीवन का पथ-प्रदर्शक पा लिया है ।'

अनुवाद जिस दिन समाप्त हुआ उस दिन पादरी ए. जी. एटकिंस ने मन-ही-मन तुलसीदासजी से निवेदन किया : 'तुलसी बाबा ! लोग रामायण का नवाह पारायण (नौ दिन का पाठ) करते हैं, कोई मास पारायण करता है, मैंने तो जीवन के २५ वर्ष आपकी कृति का पारायण किया है । आज मैं इतना आनंदित-प्रफुल्लित हूँ कि ऐसा आनंद जीवन में कभी नहीं पाया । आज मैंने अपने जीवन का श्रेष्ठतम कार्य परिपूर्ण किया । बाबा ! पारायण की समाप्ति पर पुष्पांजलि देते हैं, फूल-माला पहनाते हैं ग्रंथ को । मैं आपको क्या समर्पित करूँ ? तुलसी बाबा ! आपको अशेष प्रणाम !'

सौभाग्य, समृद्धि, शांति व जीवनीशक्ति वर्धक

ॐकार टाइल

पूज्य बापूजी के निवास-स्थान पर ॐकार की टाइलें लगी हुई हैं जो बड़ी प्रभावशाली हैं। सभीको ऐसी टाइलों का लाभ मिले इस हेतु चित्ताकर्षक एवं सत्प्रेरणा, सौभाग्य, समृद्धि व शांति प्रदायक ये ॐकार की टाइलें बनी हैं। आप भी इन्हें अपने घर में, कार्यालय में लगा सकते हैं (कमरे के फर्श पर न लगायें)। इससे बिना आयास के सहज में सुख-शांति, कार्य-साफल्यदायी ऊर्जा, आनंद-उल्लास, जीवनीशक्ति, आरोग्यशक्ति का विकास होगा। लौकिक एवं आत्मिक उन्नति होगी। (ॐकार की अन्य महिमा पढ़ें पृष्ठ ३० पर)

सर्दियों हेतु पुष्टि व बल वर्धक मेथीपाक

अनेक पौष्टिक, बलवर्धक व स्वास्थ्यप्रद पदार्थों का उपयोग कर आश्रम के पावन वातावरण में यह बनाया गया है। सालभर के लिए शक्ति का भंडारण करने हेतु उपयुक्त होने के साथ-साथ यह स्वादिष्ट भी है। यह बल व पुष्टि वर्धक, मांसपेशियों, हड्डियों, जोड़ों तथा कमर को मजबूती देनेवाला व उत्तम वायुनाशक है। इससे दाँत तथा बालों की जड़ें सुदृढ़ होती हैं। प्रसूति के एक महीने बाद इसका सेवन करने से दूध खुलकर आता है और शिशुओं के लिए वह विशेष पौष्टिक होता है।

विशेष : मेथीपाक में श्योपुर, निवाई गौशालाओं का १६५० रुपये लीटर वाला घी भी डाला गया है। जो यह पाक अधिक मात्रा में लोगों तक पहुँचाने की सेवा करेंगे उन्हें ५ प्रतिशत बिक्री-प्रतिफल भी मिलेगा।

इसे मुख्य संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा Ashram eStore से प्राप्त कर सकते हैं (डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App)।

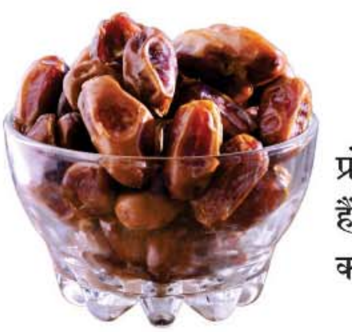

खजूर पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं। शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त, मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं। इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला एक उत्तम रसायन ब्राह्म रसायन

इसके सेवन से शरीर की दुर्बलता और दिमाग की कमजोरी दूर होकर आयु, बल, कांति तथा स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। खाँसी, दमा (asthma), क्षयरोग (T.B.), कब्जियत आदि रोग दूर हो शरीर में स्थायी ताकत पैदा होती है। यह उत्तम रसायन होने के कारण जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला है।

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश / स्पेशल च्यवनप्राश केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

* स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक * रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक * हृदय व मस्तिष्क पोषक * फेफड़ों के लिए बलप्रद * ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक * हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत * क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी * वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बलता में विशेष हितकर।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

हर्षोल्लास से मनाया गया
पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार दिवस

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Nov 2025

सर्वपितृ अमावस्या पर अपने पूर्वजों के साथ शहीदों का भी किया गया श्राद्ध व तर्पण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी